Book No- 03

"अक़वाल अल अयम्मा फी बयान अल बिदअ़ह" का हिन्दी तर्जुमा

बिदअ़त क्या है...?

मुतर्जिम:
ग़ुलामे मुहम्मद अशरफ़ी

मुसन्निफ़:
मोहम्मद हस्सान रज़ा राईनी

बिदअ़त- बिदअ़त की रट लगाने बालों के लिए तहक़ीक़ी जवाब

मनदरजा ज़ैल अय्यमा ए किराम के अक़्वाल की रौशनी में

इमाम शाफई

इमाम ग़ज़ाली | इमाम हजर अ़सक़लानी | इमाम नववी

इमाम इब्नुल असीर | इमाम ऐ़नी | इमाम अबू नुऐ़म

इमाम जुरजानी

नाशिर- तहरीक निज़ामे मुस्तफा ﷺ

Book name: Bid'at Kia Hai? | बिदअ़त क्या है?

Language: Hindi

Author: Muhammad Hassaan Raza Rayeeni

Hindi Translation: Ghulam e Muhammad Ashrafi

Hijri Date: 29 Zill Hijj 1442 H

English Date: 09 August 2021(Monday)

Publisher: Tehreek Nizam e Mustafa (India) or TNM Official

Any Query, contact us: 9675801762 & 9720315389

Read another books, visit: https://tnmofficial786.blogspot.com/

Also follow us on: Facebook | Instagram Youtube | Twitter

About Us:

All Praise is to Allah the Exalted! The revolutionary organization of Ahlus Sunnah wal Jama'ah "Tahreek Nizam e Mustafa" is constantly working for propagating the message of Ahlus Sunnah. And every work which it does is in the light of thoughts and views of Imam Ahmad Raza. It is an organization comprising of students from schools and colleges as well as seminaries (Madaris). The main aim of our organization is to preserve the beliefs of Ahlus Sunnah and the eradication of various ill practices in the society and regarding the same time and again various articles are published by us and along with it religious gatherings are organized. It is supplication to Allah the Exalted that he through the mediation of his Prophet (peace and blessings be upon him) blesses the members of this organization with true love of Islam and keeps them firm on the creed of Ahlus Sunnah wal Jama'ah and gives them success in their goals. Ameen.

TNM OFFICIAL

कलिमाते हसन

अ़ज़: ह़ज़रत अल्लामा मौलाना मुहम्मद जावेद रज़ा साहिब क़िब्ला

الحمد لله وحده و الصلوة و السلام على من لا نبي بعده

اما بعد:

दौरे हाज़िर में एक तबक़े ने या तो बिदअ़त के मायने समझे नहीं या जान बूझ कर मुसलमानों को मशक़्क़त में डालने की मज़मूम कोशिश की। मगर अल्लाह का शुक्र है उलमाए हक़ ने हमेशा मुसलमानों तक हक़ बात पहुंचाने के लिये कलम को उठाया और अपनी तक़रीरों में समझाया। ज़ेरे नज़र रिसाला भी एक कोशिश है हक़ बात को लोगों तक पहुंचाने की। ह़ज़रत हस्सान सल्लमहु(अल्लाह इन को सलामत रखे) ने बेहतरीन अंदाज़, सहल ज़ुबान में इसको तहरीर किया है। अल्लाह इस सई(कोशिश) को अपनी बारगाह में क़ुबूल फरमाए। लोगों के लिए नफ़ा बख़्श बनाए।आमीन

मुहम्मद जावेद

तक़रीज़े जलील

अज़ः हज़रत अल्लामा मौलाना ग़ुलाम मुस्तफा नईमी साहिब क़िब्ला

खलीफा ए हुज़ूर ताजुश्शरीअह, मुदीरे आला सवादे आज़म दिल्ली

जिन वुजूहात ओ असबाब की बिना पर मिल्लते इस्लामिया में इख़्तिलाफो इंतिशार बरपा है उन में "बिदअ़त" का खुद साखता मफहूम और गलत इस्तेमाल भी शामिल है। अरसा दराज़ से बदअक़ीदह जमाअतें, मरासिमे अहले सुन्नत पर "बिदअ़त" की आड़ में "बिदअ़ते दलालत " का फतवा लगाती आ रही हैं। जिस की बिना पर आबादियों में इंतिशार होता है और आपसी इख्तेलाफो इंतिशार बढ़ता है। हालांके बुनियादी काइदा है के किसी भी हदीस को शारेहीने हदीस और अयम्मा व असलाफ की तौज़ीह के मुताबिक़ ही समझना चाहिए ना के अपने ख्याले खाम के मुताबिक़!

"बिदअ़त" की तौज़ीह और तशरीह में शारेहीने हदीस और अयम्मा ए किराम ने जो इल्मी निकात कलम बंद फरमाए हैं उन से रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह हो जाता है के हर नौपैद चीज़ को "बिदअ़ते दलालत" कहना

ख़ुद साख़ता तशरीह और मोमिनीन पर जसारते बेजा है। जो एक मज़मूम अ़मल और बाइ़से गुनाह है। इसी उनवान पर मुहिब्बे गिरामी वक़ार **मौलाना हस्सान रज़ा कादिरी** ज़ीदा इलमुहु ने एक रिसाला तरतीब दिया है। जिस में बिदअ़त की लुगवी व इस्तिलाही तारीफ और उस की तौज़ीह और तशरीह को निहायत सादा वा सिलेस अंदाज़ में कलम बंद फरमा कर उनवान पर सैर हासिल कलाम किया है। रिसाले की ज़ुबान सादा और आम फहम है और दलाइलो बराहीन से ममलु(भरी हुई) है।

अपनी गुफ्तुगु को दलाइल से मुजय्यन करते हुए मौसूफ ये बात साबित करने में सद फीसद कामयाब रहे हैं के मौजूदा बदअक़ीदा अफराद का अपनी मनमर्ज़ी से खुश अक़ीदा मुसलमानों को बिदअ़ती कहना "हदीसे बिदअ़त" के मफहूम से नाआशनाई ,लाइल्मी, फिक्रे फासिद का इज़हार है। ऐसे कज फिक्र और बदअक़ीदा अफराद मुस्तहसन उमूर पर अमल पैरा मुसलमानों को बिदअती व गुनहगार कह के हक़्क़ुल इबाद में भी गिरफ्तार हैं। जिस के लिये इन्हें बारगाहे मौला में जवाब देना होगा।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है के मौलाना मौसूफ की इस काविश को कुबूल फरमाए, उन के इल्मो अमल और क़लम में बरकतें अता फरमाए।

फकत वस्सलाम

गुलाम मुस्तफा नईमी

20 शव्वाल उल मुकर्रम 1441 हिजरी

13 जून 2020 बरोज़ हफ्ता

क्या है ?

मुसन्निफ़: मुहम्मद हस्सान रज़ा राईनी

मुतर्जिम: गुलामे मुहम्मद अशरफी

نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم بسم اللہ الرحمن الرحیم

इस्लाम के ही मानने वाले कुछ अफराद ऐसे हैं जब किसी काम का मुशाहिदा करते हैं अगर वह काम उनकी अक़्ल से परे हो तो फौरन उन के मुंह से एक जुमला निकलता है "**ये काम बिंदअ़त है हर बिदअ़त गुमराही है और हर गुमराही जहन्नम में ले जाने वाली है**" बिना गौरो फिक्र के चंद लम्हों में मुसलमानों को बिदअ़ती, गुमराह बना देते हैं और उन्हें इस ज़ुबान दराज़ी पर ज़र्रा बराबर भी अफसोस नहीं होता हालांके अगर उन से बिदअ़त का मफहूम पूछा जाए तो वह लोग सहीह मायनों में बिदअ़त की ब से भी वाक़िफ नहीं निकलते ऐसा इसलिये होता है के उन्हें उनके आक़ाओं ने ये रटा दिया है के जहां भी कोई नया काम देखो चाहे तुम्हारी अक़्ल में आए या ना आए उस काम को फौरन बिदअ़त कह दो।

यही हुआ मौजूदा हालात ऐसे हैं के कुछ मकतब ए फिक्र के लोग दिन रात सिर्फ दो लफ्ज़ों का ही विर्द करते रहते हैं शिर्क और बिदअ़त मानो

ऐसा लगता है जैसे उन की अक़्ल में तीसरा लफ़्ज़ आने से कोई शै मानेअ़ (रुकावट) है। ऐसा लगता है जैसे इन्हें शिर्क व बिदअ़त का हैज़ा हो गया हो ऐसा लगता है उन लोगों ने पूरी उम्मते मुस्लिमा को मुशरिक और बिदअती बनाने का ठेका ले रखा हो।

हम ने सोचा क्यूं ना लोगों को बिदअ़त का सहीह मफहूम बताया जाए और सुन्नत और बिदअ़त में जो फर्क है उसे वाज़ेह किया जाए और ये वज़ाहत सिर्फ अपने क़यास और राए से ना की जाए बल्कि क़ुरूने ऊला (इस्लाम के इब्तिदाई ज़माने) के अय्यमा ए अहले सुन्नत, सलफ-स्वालेहीन ने जो अहादीस के मतालिब समझाए हैं उन अक़वाल से ये वज़ाहत की जाए इसलिए हम ने इस मक़ाले का नाम "**अकवाल अल अयम्मा फी बयान अल बिदअह**" रखा और इस के लिए **कंज़ुल उलामा डा अशरफ आसिफ जलाली साहिब क़िब्ला** के इफहामे दीन कोर्स से इस्तिफादा किया। कारेईन से इल्तिजा है इस मुख़्तसर मक़ाले को पढ़ कर दूसरों तक ज़रूर पहुंचाएं।

अल्लाह तआ़ला से दुआ है के हमारी इस सई़ को बतुफैले मुस्तफा ﷺ अपनी बारगाह में क़ुबूल फरमाए आमीन

आइए बिदअ़त की लुगवी और इस्तिलाही तारीफ जानते हैं।

लुगवी तारीफ:

इमाम जुरजानी रहमतुल्लाह अलैह (अलमुतावफ्फा 471 हिजरी) लिखते हैं।

إيجاد الشيء غير مسبوق بمادة ولا زمان

वह शै(चीज़) बनाना जिस का पहले माद्दा भी ना हो।

(अल तारीफात, प:20)

इमाम इब्ने हजर अ़सक़लानी रहमतुल्लाह अलैह (अलमुतावफ्फा : 852 हिजरी) अपनी मारूफ शरह फत्हुल बारी में लफ्ज़े बिदअ़त की लुगवी तारीफ यूं बयान करते हैं:

البدعة أصلها ما أحدث على غير مثال سابق

बिदअ़त की अस्ल ये है के उसे बग़ैर किसी साबिका नमूने के ईजाद किया गया हो। (फत्हुल बारी, ज:4, प:298)

इब्ने फारस (अलमुतावफ्फा :1004 हिजरी) अपनी मारूफ लुगत "मौअ़जम मकाईस अल लुगह" में बिदअ़त का लुग्वी मानी बयान करते हुए लिखता है :

ابتداء الشيء و صنعه لا عن مثال

किसी साबिका मिसाल के बगैर किसी चीज़ का आगाज़ करना या बनाना बिदअ़त कहलाता है।

(मौअ़जम मकाईस अल लुगह, ज:1, प:111)

अल मुंजिद फिल लुगह में है

اخترعه و صنعه لا على مثال

बिदअ़त का मायना किसी मिसाल के बगैर कोई नई चीज़ ईजाद करना बनाना है।

(अल मुंजिद फिल लुगह, प:29)

इन तमाम तारीफात से वाज़ेह होता है के किसी ऐसी चीज़ को बनाना जिस की पहले मिसाल , नमूना या माद्दा मौजूद ना हो यानी जिस को बगैर मिसाल के ईजाद किया गया हो और एक दम नया बनाया गया हो उसे बिदअ़त कहते हैं।

दूसरे लफ्ज़ों में किसी शै को नीस्त से हस्त करने और अ़दम से वुजूद में लाने को अरबी ज़ुबान में इब्दाअ़ कहते हैं इस का माद्दा ब-द-अ़ है और बिदअ़त का माद्दा भी ब-द-अ़ है। कुरआने पाक में भी इसकी मिसाल मिलती है

अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया:

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ

तुम फरमाओ मैं कोई अनोखा रसूल नहीं

(सूरह अल अहकाफ : 9)

मतलब ये था के मैं कोई पहला नबी नहीं हूँ मुझ से पहले भी नबी आते रहे हैं और मैंने नबुव्वत का ऐलान करके कोई नई बात नहीं की है मुझ से पहले भी अल्लाह के पैगम्बर आते रहे हैं और उन्होने नबुव्वत का ऐलान

किया है । लिहाज़ा मैं ने कोई अनोखी बात नहीं की जिस पर तुम्हें तअ़ज्जुब हो के मैं ने क्या दावा कर दिया है ? ऐसा कोई काम मैं ने नहीं किया है । ऐसे ही दूसरी आयत में है

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

ज़मीन व आसमान को नया पैदा करने वाला

(सूरह अल बकरह : 117)

इस आयत में लफ्ज़ بَدِيْعُ भी ब-द-अ़ से मुशतक है । खुलास ए कलाम ये के बिदअ़त का मायना नया काम , नई बात, नई ईजाद है ।

इस्तिलाही तारीफ :

इमाम जुरजानी रहमतुल्लाह अलैह ने बिदअ़त की इस्तिलाही तारीफ यूँ बयान की है

البدعة هى الفعلة المخالفة للسنة

बिदअ़त उस को कहा जाता है जो सुन्नत के मुखालिफ हो

(अत-तारीफात , प:62)

ये बिदअ़त की इजमाली तारीफ है बिदअ़त को समझने के लिए तफसील दरकार है तफसील इस लिए ज़रूरी है के अगर बिदअ़त की पहचान नहीं होगी तो सुन्नत को इस से जुदा नहीं किया जा सकेगा और फिर इंसान के अमल में बिदअ़त की आमेज़िश हो जाएगी और बिदअ़त की आमेज़िश ही बहुत बड़ी चीज़ है ।

अस-सुन्नह में **इमाम अबू आसिम** रहमतुल्लाह अलैह ने एक हदीसे पाक नक़ल की है जो हज़रत अनस रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया

إن الله حجز التوبة عن كل صاحب بدعة

बेशक अल्लाह ने बिदअ़ती से तौबा को रोक लिया है

(अस-सुन्नह , हिस्सा:1, प:59)

ऐसे ही हज़रत जाबिर रदिअल्लाहु अन्हु से हुजूरे अकरम ﷺ का एक तवील खुतबा सहीह मुस्लिम में मरवी है के आप ﷺ ने फरमाया उस का कुछ हिस्सा ये है

فإن خير الحديث كتاب الله، و خير الهدى هدى محمد صلى الله عليه وسلم ، و شر الأمور محدثاتها و كل بدعة ضلالة

बेशक सारी बातों से अच्छी बात अल्लाह की किताब है और सारे तरीकों से अच्छा तरीका हज़रत मुहम्मद मुस्तफा ﷺ का तरीका है और सारे कामों से बुरे काम वह हैं जो नए बना लिए गए हों और हर बिदअ़त गुमराही है ।

(सहीह मुस्लिम, हदीस : 867)

रसूले अकरम ﷺ का ये फरमान बता रहा है के आप ने बिदअ़त से महफूज रहने के लिए तंबीह फरमाई और बिदअ़त को गुमराही करार दिया ।

इमाम शाफेई रदियल्लाहु अन्हु (अलमुतावफ्फा 204 हिजरी) ने बिदअ़त के बारे में फरमाया

المحدثات من الأمور ضربان أحدهما ما أحدث يخالف كتابا أو سنة أو أثرا أو إجماعا فهذه البدعة الضلالة و الثاني ما أحدث من الخير لا خلاف فيه لواحد من هذه ، فهذه محدثة غير مذمومة

बिदअ़त की दो किस्में हैं उन में से एक ये है के जो उमूर नए बना लिए गए हों और कुरआन के मुखालिफ हों या सुन्नत के मुखालिफ हों या सहाबा के आसार के मुखालिफ हों या इजमा के मुखालिफ हों तो वह बिदअ़त गुमराही है और दूसरी किस्म ये है काम अगरचे नया हो लेकिन कुरआन, सुन्नत और इजमा के खिलाफ ना हो तो वो बिदअ़त गैर मज़मूम होगी । (यानी बिदअते हसना होगी ।

(सियरु आलमिन नुबाला: 10 / 70)

ये इसी तरह है जैसा हजरत उमर रदियल्लाहु अन्हु रमज़ानुल मुबारक की रात में जब मस्जिदे नबवी शरीफ नमाज़ियों से भरी हुई थी और जमाअ़त के साथ नमाज पढ़ी जा रही थी तो आप ने फरमाया

نعمت البدعة هذه

ये काम तो नया है मगर अच्छा है

(मिश्कात अल मसाबीह, 1301)

ये हदीसे पाक सनदे सहीह से साबित है ।

चूंके रसूले अकरम ﷺ ने रोज़ाना नमाज़े तरावीह की जमाअत नहीं कराई आप ﷺ ने तीन रातें नमाज़े तरावीह बा-जमाअ़त पढ़ाई । रोज़ाना नमाज़े तरावीह बा-जमाअ़त पढ़ना और 20 रकअ़त पढ़ना ये सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन का इजमा है।

इसलिए यहाँ इमाम शाफेई रदियल्लाहु अन्हु ने आगे ज़िर्क करते हुए फरमाया :

وقد قال عمر رضی الله عنه فی قیام رمضان نعمت البدعة هذه یعنی أنها محدثة لم تکن و إذا كانت فليس فيها رد لما مضى

माहे रमज़ान में तरावीह की जमाअत के लिए हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हु का कौल के ये अच्छी बिदअ़त है इस का मतलब है अगरचे काम नया है पहले नहीं था मगर इस्लाम के किसी शिआ़र का रद भी तो नहीं करता

(सियरु आलमिन नुबाला: 10 / 70)

इसी बात को **इमाम अबू नुऐ़म** रहमतुल्लाह अलैह ने ह़िलया में इमाम शाफेई से दूसरे अंदाज़ मे बयान किया है इमाम शाफेई रहमतुल्लाह अलैह फरमाने लगे

اما البدعة بدعتان، بدعة محمودة و بدعة مذمومة، فما وافق السنة فهو محمود وما خالف السنة فهو مذموم

बिदअ़त की दो किस्में हैं एक बिदअ़ते महमूदा, दूसरी बिदअ़ते मज़मूमा तो जो सुन्नत के मुताबिक हो उसे बिदअ़ते महमूदा कहते हैं और जो सुन्नत के मुखालिफ हो उसे बिदअ़ते मज़मूमा कहते हैं।

(हिलयतुल औलिया: 9/113)

बिदअ़त के बारे में **इमाम गज़ाली** रहमतुल्लाह अलैह (अलमुतावफ्फा : 505 हिजरी) फरमाते हैं

البدعة قسمان، بدعة مذمومة و هي ما تصادم السنة القديمة و بدعة حسنة ما أحدث على مثال سابق

बिदअ़त की दो किस्में हैं एक बिदअ़त मज़मूम होती है और वह ये है जो सुन्नते कदीमा से टकराए और दूसरी बिदअ़ते हसना जिसे मिसाले साबिक पर ईजाद किया गया हो।

(अल-कौल अल-सदीद शरह जौहर अल-तौहीद, प:169)

इमाम नववी रहमतुल्लाह अलैह (अलमुतावफ्फा 676 हिजरी) ने अपनी तसनीफ तहज़ीब अल असमा वल लुगह में बिदअ़त को यूँ बयान किया के :

هي إحداث ما لم يكن في عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم ، وهي منقسمة إلى حسنة وقبيحة

बिदअ़त वो है के जो नबी ए करीम ﷺ के ज़माने में ना हो (और बाद में उस को पैदा किया जाए) फिर उस के आगे दो किस्में हैं एक बिदअते हसना है और दूसरी बिदअते क़बीहा ।

(अल-कौल अल-सदीद शरह जौहर अल-तौहीद, प:170)

इमाम इब्नुल असीर रहमतुल्लाह अलैह (अलमुतावफ्फा : 630 हिजरी) अपनी किताब "अन-निहाया फी गरीबिल हदीस वल अस्र " में फरमाया :

البدعة بدعتان : بدعة هدى وبدعة ضلال فما كان في خلاف ما أمر الله به ورسوله صلى الله عليه وسلم

बिदअ़त की दो किस्में हैं एक बिदअ़ते हुदा यानी हिदायत वाली बिदअ़त दूसरी गुमराही वाली बिदअ़त । गुमराही वाली बिदअ़त वो है जो अल्लाह और उस के रसूल ﷺ के हुक्म के खिलाफ हो ।

(अल-कौल अल-सदीद शरह जौहर अल-तौहीद, प:170)

इमाम ऐ़नी रहमतुल्लाह अलैह (अलमुतावफ्फा : 850 हिजरी) के नजदीक बिदअ़त की तारीफ :

البدعة في الأصل إحداث أمر لم يكن في زمن رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم البدعة على نوعين إن كانت مما يندرج تحت مستحسن في الشرع فهي بدعة حسنة ، وإن كانت مما يندرج تحت مستقبح في الشرع فهي بدعة مستقبحة

असल में बिदअ़त ये है के एक ऐसी चीज़ बनाना के जो रसूले अकरम ﷺ के ज़माने में ना हो । फिर बिदअ़त की दो किस्में हैं अगर वो काम ऐसा है के वो शरीअ़त के किसी हसन काम के नीचे दर्ज हो रहा है तो उसको बिदअते हसना कहा जाएगा और अगर वो नया काम ऐसे काम के नीचे दाखिल हो जो काम शरीअ़त में कबीह हो तो उसे बिदअ़ते कबीहा कहते हैं ।

(उम्दतुल क़ारी: 11/179)

बिदअ़त के तअल्लुक से अहादीसे करीमा :

मिश्कात शरीफ में हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु से एक हदीस मरवी है जिस का कुछ हिस्सा यूँ है

हुज़ूर ﷺ ने फरमाया :

من سن في الإسلام سنة حسنة كان له أجرها وأجر من عمل بها من بعده لا ينقص ذلك من أجورهم شيئا ومن سن في الإسلام سنة سيئة كان عليه وزرها ووزر من عمل بها من بعده لا ينقص ذلك من أوزارهم شيئا

जो इस्लाम में अच्छा तरीका ईजाद करे उसे अपने अमल और उनके अमलों का सवाब है जो इस पर कारबंद हों उन का सवाब कम किये बगैर और जो इस्लाम में बुरा तरीका ईजाद करे उस पर अपनी बदअमली का गुनाह है और उनकी बदअमलियों का जो इसके बाद उन पर कारबंद हों इस के बगैर उन के गुनाहों से कुछ कम हो

(मिश्कात अल मसाबीह : 210)

तशरीह:

अल्लामा अहमद यार खां नईमी रहमतुल्लाह अलैह इस हदीस की शरह में फरमाते हैं :

मूजिद ए खैर (अच्छी चीज को ईजाद करने वाला) तमाम अमल करने वालों के बराबर अज्र पाएगा जिन लोगों ने इल्मे फिक्ह, फन्ने हदीस, मीलाद शरीफ, उर्से बुजुर्गान, ज़िक्रे खैर की मजालिसें, इस्लामी मदरसे, तरीक़त के सिलसिले ईजाद किये उन्हें क़यामत तक सवाब मिलता रहेगा । यहा इस्लाम में अच्छी बिदअ़त ईजाद करने का ज़िर्क है ना के छोड़ी हुई सुन्नतें ज़िंदा करने का, इस हदीस से बिदअ़ते हसना के खैर होने पर आला सुबूत हुआ। ये हदीस उन तमाम अहादीस की शरह है जिन में बिदअ़त की बुराईयां आई । साफ मालूम हुआ के बिदअ़ते सैय्या बुरी है और उन अहादीस में यही मुराद है

ये हदीस बिदअ़त की दो किस्में फरमा रही है बिदअ़ते हसना और सैय्या । इस में किसी क़िस्म की तावील नहीं हो सकती उन लोगो पर अफसोस है जो इस हदीस से आँखे बंद कर के हर बिदअ़त को बुरा कहते हैं हालांकि खुद हज़ारों हज़रो बिदअ़ते करते हैं।

(मिरात अल मनाजीह: 1/180)

हज़रते जाबिर रदियल्लाहु अन्हु की हदीस में......

كل بدعة ضلالة

से अगर हर बिदअ़त गुमराही तसव्वुर करली जाए तो उम्मते मुस्लिमा के अकसर अफराद गुमराह हो जाएंगे और ऐसा होना नामुमकिन है क्यों के हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फरमाया:

إن الله لا يجمع أمتى أو قال: أمة محمد على ضلالة و يد الله على الجماعة و من شذ شذ فى النار

यक़ीनन अल्लाह मेरी उम्मत को गुमराही पर मुत्तफ़िक़ ना करेगा । जमाअ़त पर अल्लाह का दस्ते करम है जो जमाअ़त से अलग रहा दोज़ख में अलग ही जाएगा ।

(मिश्कात अल मसाबीह : 173)

यहां उम्मत से उम्मते इजाबत मुराद है ।

एक दूसरी हदीस में है के हुज़ूर ﷺ ने फरमाया :

إتبعوا سواد الاعظم فإنه من شذ شذ فى النار

बड़े गिरोह की पैरवी करो क्यों के जो अलग रहा वह अलग ही आग में जाएगा

(मिश्कात अल मसाबीह: 174)

जिस मसअले पर उम्मते मुसलिमा मुत्तफिक हो जाए यानी उलामा, औलिया वगैरह मुत्तफिक हो जाएं वह मसअला ऐसा ही लाज़िमुल अ़मल है जैसे कुरआन की आयत, इज्मा ए उम्मत का हुज्जत होना ये भी इस उम्मत की खुसूसियत है।

अब मिलाद उन नबी के जवाज़ के मसअले पर कई सदियों से ये उम्मत मुत्तफिक है अब उसे कोई बिदअ़त या गुमराही कहता है तो उसने जमाअ़त की पैरवी से इंकार किया और जो जमाअ़त से जुदा हुआ वह जहन्नम में डाल दिया जाएगा

सवादे आज़म अहले सुन्नत व जमाअ़त ही वह जमाअत है जो जन्नत में जाएगी और इस के सुबूत में बहुत से दलाइल मौजूद हैं।

अब सवादे आज़म के नज़दीक जो उमूर जाइज़ो मुस्तहसन हैं उन्हें बिदअ़त या गुमराही कहना खुद परले दर्जे की गुमराही है और जहन्नम में जाने का रास्ता हमवार करने के मुतरादिफ है | इसलिए किसी चीज़ को बिदअ़त कहने से पहले कुरआन व हदीस , आसारे सहाबा, इजमा ए उम्मत पर पहले नज़र करना चाहिये अगर वहां उस नई चीज़ की मिसाल ना मिले तो वह ज़रूर गुमराही है और उस नई चीज़ की मिसाल मौजूद

हो तो वो काम जाइज़ो मुस्तहसन है और उस पर अमल करने वालों को उस पर सवाब भी मिलेगा और जो लोग फिर भी गुमराही कहें तो ज़रूर ये उनकी कमअक़्ली की दलील है |

कुछ लोग कहते हैं फुलां काम बिदअ़त है क्योंकि ये सहाबा ए किराम से साबित नहीं । इस के बारे में हुज्जतुल इसलाम इमाम ग़ज़ाली रहिमहुल्लाह अलैह फरमाते हैं :

قول القائل إن ذلك بدعة لم يكن في الصحابة فليس كل ما يحكم بإباحة منقولا عن الصحابة رضي الله عنهم إنما المحذور ارتكاب بدعة تراغم سنة مأثورة

ये कहना के ये बात बिदअ़त है क्योंके ये सहाबा ए किराम में ना थी सही नहीं क्योंके कुल मुबाहात सहाबा ए किराम से मनकूल नहीं है बिदअ़त वो है जो सुन्नत के मुखालिफ हो

(इहया अल उलूम : 2/180)

इमाम गज़ाली फरमा रहे हैं जो बात सहाबा से भी मनकूल ना हो और शरीअत के खिलाफ भी ना हो तो उसे बिदअ़त कहना सही नहीं आज के नाम निहाद मौलवी हज़रात उसको भी बिदअ़ते सैय्या और गुमराही

कहते हैं जिस की शरीअ़त में मिसाल मौजूद हो और जिस पर उम्मते मुसलिमा सदियों से अमल करती चली आई हो।

कुरआने पाक को जमा करना :

हजरते सय्येदुना अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहु अन्हु ने हज़रत ज़ैद बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु को कुरआने पाक को जमा करने का हुक्म दिया क्योंके मुसैलमा कज़्ज़ाब के लश्कर से जंग करते हुए काफी हुफ्फाज़ ए किराम, क़ुर्रा हज़रात शहीद हो गए थे जिस से ये खतरा महसूस हुआ के कहीं कुरआने पाक की बरकतों से हम महरूम ना हो जाएं। इस हिकमत के तहत सिद्दीके अकबर रदियल्लाहु अन्हु ने ये हुक्म दिया तो हज़रते ज़ैद बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया

كيف تفعلون شيئا لم يفعله رسول الله صلى الله عليه وسلم

आप लोग वो काम क्यों करते हैं जो हुज़ूर ﷺ ने नहीं किया?

आप रदियल्लाहु अन्हु ने फरमाया :

هو والله خير

अल्लाह की क़सम इस काम में भलाई है।

(तफसीर इब्ने कसीर : 1/33)

पता चला जो नया काम अच्छा हो और शरीअ़त के खिलाफ ना हो उस काम को बिदअते सैय्या या गुमराही कहना दुरुस्त नहीं ।

ख़ुलाफ़ा ए राशिदीन ने जो हुक्म सादिर फरमाए और जो भी नए काम किए जो उम्मते मुस्लिमा की खैर ख्वाही के लिए थे वो सब सुन्नत के दायरे में ही आते हैं।

क्योंके हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फरमाया:

عليكم بسنتي و سنة الخلفاء الراشدين

तुम पर मेरी और मेरे ख़ुलाफ़ा ए राशिदीन की सुन्नत पर अमल करना लाज़िम है।

(ऐ़लाम अल मुवक्केई़न : 3/478)

यहाँ पर हुज़ूर ﷺ ने अपनी सुन्नत के साथ साथ ख़ुलाफ़ा ए राशिदीन के हुक्मो को भी सुन्नत करार दिया ।

और फरमाया :

إقتدوا بالذين من بعدى أبا بكر و عمر

तुम लोग मेरे बाद अबू बक्र और उमर की इक्तिदा करना

(ऐ़लाम अल मुवक्केईन : 3/478)

जिस तरीके से तरावीह की जमाअ़त और कुरआन का जमा करना उम्मत की भलाई के लिए था और ये चीज़ें हरगिज़ अहदे रसूल ﷺ में मौजूद नहीं थी आज भी कुछ काम उम्मत की भलाई के लिए किए जाते हैं तो उन्हें भी बिदअते सैय्या कहना दुरुस्त नहीं है।

शहादत से पहले नमाज़ पढ़ना :

हजरते खबीब रदियल्लाहु अन्हु मक्का शरीफ में गिरफ्तार थे । आपको शहीद करने के लिए लाया गया तो आप फरमाने लगे एक छोटी सी तजवीज़ है मुझे ज़रा छोड़ो मैं ज़रा अल्लाह को सज्दा कर लूँ दो रकअ़ते पढ़ना चाहता हूँ तो आप ने दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी और फरमाने लगे :

لولا أن تروا أن ما بي جزع من الموت لزدت

अगर मुझे ये खतरा ना होता के तुम ये कहना शुरु कर दोगे के मौत से डर के इस ने नमाज़ लम्बी कर ली है तो मेरा दिल और नमाज पढ़ने पर भी था।

(सहीह बुखारी : 3858)

मैं इस्लाम की गैरत पर भी पहरा देना चाहता हूँ के यहाँ ऐसा तसव्वुर नहीं पैदा होना चाहिए के मौत से डरते हैं।

इस्लाम में शहादत से पहले नमाज़ का कोई तसव्वुर नहीं अब इस को आज के नाम निहाद मौलवी हज़रात क्या कहेंगे ?

खुद बुखारी शरीफ में मोजूद है:

أول من سن ركعتين عند القتل

हज़रते खबीब रदियल्लाहु अन्हु वो पहले इंसान हैं जिन्होंने शहादत के वक्त दो रकअ़त नमाज़ नफिल पढ़ने की बुनयाद डाली ।

(सहीह बुखारी : 3858)

अगर्चे ये काम नया है मगर नमाज़ की मिसाल उनके पास मौजूद थी। वक्त का तअय्युन उन्होंने अपनी तरफ से कर लिया और वक्त का तअय्युन करने से बंदा बिदअ़ती नहीं बन जाता उन्होंने अपनी तरफ से

नया वक्त बना लिया दो रकअ़त नमाज़े शहादत पढ़ी है। इस को सरकार ﷺ ने रद नहीं फरमाया बल्कि जब उनका सलाम सरकार ﷺ को पहुंचा है तो अलैका से सलाम का जवाब शहादत के बाद भी दिया।

तो जिस वक्त शहादत की नमाज़ के लिए वक्त का तअय्युन कर लिया जाए तो बिदअ़त नहीं है। तो अज़ान से पहले अज़ान के बाद और जुमअ़ा पढ़ कर सलाम पढ़ा जाए तो ये कैसे बिदअ़त हो सकता है ?

हदीस लिखने से पहले गुस्ल और दो रकअ़त नमाज़ :

हजरत इमाम बुखारी रदियल्लाहु अन्हु का नाम वो भी लेते हैं जो इमाम बुखारी के अक़ीदे के खिलाफ हैं।

उन के नज़रिये पर वो ही काइम रह सकता है जिसको आज सुन्नी कहा जाता है। इमाम बुखारी रदियल्लाहु अन्हु के बारे में आता है के आप ने फरमाया :

ما وضعت فی کتابی (الصحیح) حدیثا إلا اغتسلت قبل ذلك و صلیت رکعتین

मैं ने बुखारी में हर ददीस लिखने से पहले गुस्ल किया और दो रकअत नफिल नमाज़ भी पढ़ी।

(शरह किरमानी अ़लल बुखारी: 1/11)

अब इमाम बुखारी से पूछा जाए के ये कहाँ लिखा है के हदीस शरीफ लिखने से पहले गुस्ल करना चाहिये ? क्या इसकी मिसाल हुज़ूर नबी ए करीम ﷺ के ज़माने मे मिलती है ?

नहीं मिलती है तो ये काम भी नया हुआ और नए काम को नाम निहाद मौलवी हज़रात क्या कहेंगे ? उन के नज़दीक तो इमाम बुखारी भी बिदअ़ती हुए मआ़ज़-अल्लाह !

मालूम हुआ के बुखारी पढ़ने के मुस्तहिक़ वो है जो इमाम बुखारी को बिदअ़ती ना माने, सुन्नी माने और सुन्नी वो माने जो बिदअ़त की ये तारीफ माने जो हम ने ऊपर बयान की है।

यहाँ जो भी बयान किया गया उसकी एक दलील तो मुहब्बत है क्योंके लफ्ज़ महबूब के हों और लिखें इमाम बुखारी तो गुस्ल तो ज़रूर करना चाहिए ।

खुलासा ए कलाम ये के बिदअ़त की अगर किस्में ना की जाएं तो कोई भी बंदा गुमराही से नहीं बच सकता । हर बंदा कोई ना कोई नया काम ज़रूर करता है अब हमें ये देखना होगा के अगर वो काम शरीअ़त के तहत आता है तो इस काम को बिदअ़त नहीं कहा जा सकता और शरीअ़त के खिलाफ है तो ज़रूर बिदअ़ते सैय्या और गुमराही है ।

बिदअ़त के और भी अक़साम हैं जिस के तअल्लुक से मुल्ला अली कारी रहमतुल्लाह अलैह लिखते हैं :

البدعة إما واجبة كتعلم النحو وكتدوين أصول الفقه ، وإما محرمة كمذهب الجبرية ، وإما مندوبة كإحداث الربط والمدارس ، وكل إحسان لم يعهد في الصدر الأول ، وكالتراويح أي بالجماعة العامة ، وإما مكروهة كزخرفة المساجد إما مباحة كالمصافحة عقيب الصبح ، والتوسع في لذائذ المآكل والمشارب والمساكن

बिदअ़त या तो वाजिब है जैसे इलमे नहव का सीखना और उसूले फिक्ह का जमा करना या हराम है जैसे जबरिया फिरक़ा या मुस्तहब जैसे मुसाफिर खानों और मदारिस का क़ाइम करना और हर वो बात जो पहले ज़माने में ना थी और जैसे तरावीह का जमाअत से पढ़ना, और या बिदअ़त मकरुह है

जैसे मस्जिदों की फखरिया ज़ेबो ज़ीनत करना और या बिदअ़त जाइज़ है जैसे सुबह की नमाज़ के बाद मुसाफा करना और उम्दा खाना खाना लज़ीज शर्बत पीना और अच्छे घरों में रहना ।

(मिरक़ात अल मफातीह : 1/337-338)

यहाँ पर बिदअ़त की पाँच क़िस्में की गईं :

1.बिदअ़ते वाजिबा

2.बिदअ़ते मुबाह

3.बिदअ़ते मुसतहिब्बा

4.बिदअ़ते मकरूहा

5.बिदअ़ते मुहर्रमा

मौजूदा दौर के एतिबार से जितने नए नए फिर्के बन रहे हैं ये सब बिदअ़ते मुहर्रमा हैं यानी बिदअते सैय्या हैं । वहाबी, देओबंदी, कादियानी, अहले हदीस, चकढ़ालवी, जमाअ़ते इस्लामी, राफज़ी वगैरह तमाम बातिल फिर्के हुज़ूर ﷺ के ज़माने में नहीं थे और उन के अक़ीदे भी शरीअ़त के खिलाफ हैं और जो नया काम शरीअ़त के खिलाफ हो वो बिदअ़ते सैय्या

है और हर बिदअते सैय्या गुमराही है और हर गुमराही जहन्नम में ले जाने वाली है।

तबलीगी जमाअ़त और उस के चिल्ले :

तबलीगी जमाअ़त की बुनियाद 1926 ईस्वी में इल्यास कांधल्वी ने रखी और चिल्लों की बुनयाद डाली जिस की मिसाल ना हुज़ूर ﷺ के ज़माने में मिलती है ना सहाबा के ज़माने में, ना ही उन चिल्लों पर इस उम्मत का इजमा रहा तो साबित हुआ के ये शरीअ़त के तहत नहीं हैं और जो काम शरीअ़त के तहत ना हो वो बिदअ़ते सैय्या है और बिदअ़ते सैय्या गुमराही है और हर गुमराही जहन्नम में ले जाने वाली है । मालूम हुआ की तबलीगी जमाअ़त और उस के चिल्ले सब बिदअ़ते सैय्या हैं ।

और जो लोग भी तबलीगी जमाअ़त में शामिल हैं वह हदीस की रू से गुमराह हुए और अगर वो इसी हालत पर रहे और तौबा करके सहीह रास्ते पर नहीं आए तो कल बरोज़े क़यामत जहन्नम में ठूँस दिये जाएंगे ।

अहले सुन्नत व जमाअ़त को बिदअ़ती और गुमराह कहने वाले अपने घर का जाइज़ा लें के उन के घर में जो दीन है क्या वो वही है जो रसूलुल्लाह ﷺ ले कर आए हैं या उनका खुद-साखता है फिर जब अपने घर की हक़ीक़त मालूम हो जाए तो जिस तरीके से शिर्को-बिदअ़त के तीर हम अहले सुन्नत पर चलाते हैं अपने घर में भी चलाएं अपने घर वालों को भी शिर्को-बिदअ़त से आशना कराएं और अगर ऐसा नहीं कर सकते तो अपनी ज़ुबानें बंद रखें। उलूम ए दीनिया के यतीमों को ये शेवा नहीं देता के बिदअ़त जैसे मौज़ू पर अपनी राए पेश करें और अहादीसे करीमा में खयानत करें । दीन मुकम्मल हो चुका अब सब कुछ वाज़ेह हो चुका तहकीक के नाम पर दीन में तहरीफ नहीं चलेगी हर किसी की राए दीन में मोअ़तबर नहीं।

नई नई खुराफातों का दीन से कोई तअ़ल्लुक नहीं चाहे उन खुराफातों का ईजाद करने वाला कोई मौलवी, पीर, दुनियादार या आम इंसान ही क्यों ना हो , जो लोग ये खुराफातें करते हैं वो बरोज़े कयामत अपना अंजाम देख लेंगे के उन की ज़ुबानो को आग की कैंची से काटा जाता होगा उस वक़्त चीखेंगे चिल्लाएगें मगर उस से कोई फायदा ना होगा ।

अभी वक़्त है तौबा कर लो अल्लाह गफूर-उर-रहीम है हुज़ूर नबी ए करीम ﷺ के तवस्सुल से अपनी गलतियों और कोताहियों से मुआफी माँग लो

आज ले उन की पनाह आज मदद माँग उन से

कल ना मानेंगे क़यामत में अगर मान गया

बात खत्म हुई अमल की गुज़ारिश है, अल्लाह से दुआ है हमारी इस सई़ को कुबूल फरमाए अल्लाह हमारा हामी ओ नासिर हो।

11 शव्वाल उल मुकर्रम 1441 हिजरी बरोज़ बुध

About Us:

All Praise is to Allah the Exalted! The revolutionary organization of Ahlus Sunnah wal Jama'ah "Tahreek Nizam e Mustafa" is constantly working for propagating the message of Ahlus Sunnah. And every work which it does is in the light of thoughts and views of Imam Ahmad Raza. It is an organization comprising of students from schools and colleges as well as seminaries (Madaris). The main aim of our organization is to preserve the beliefs of Ahlus Sunnah and the eradication of various ill practices in the society and regarding the same time and again various articles are published by us and along with it religious gatherings are organized. It is supplication to Allah the Exalted that he through the mediation of his Prophet (peace and blessings be upon him) blesses the members of this organization with true love of Islam and keeps them firm on the creed of Ahlus Sunnah wal Jama'ah and gives them success in their goals. Ameen.

Our Services:

Suffah Portal

YouTube Channel

Afkar Magazine

it's a bilingual Magazine (Urdu & Hindi)

Visit Our Blog:

www.tnmofficial786.blogspot.com

TEHREEK NIZAM E MUSTAFA

Contact us: 9675801762 & 9720315389